नीति है वह बहुत ही अच्छी नीति है। इसका हम स्वागत करते हैं और हम बताना चाहते हैं कि जहाँ पहले 108 चीजें छोटे उद्योग के लिए थीं अब उनमें 504 चीजें आ गयी हैं। इतना होते हुए भी हम चाहते हैं कि इस तरफ विशेष ध्यान देना चाहिए ताकि हमारे छोटें उद्योग धन्धे पनप सकें और गाँवों का आर्थिक विकास ठीक से हो सके। अभी तक छोटे उद्योग वाले द्विविधा में पड़े हुए थे कि छोटे उद्योगों की सूची में क्या आयेगा, बड़े उद्योगों की सूची में क्या आयेगा। अब यह द्विविधा समाप्त हुई हैं। इन शब्दों के साथ हम इसका समर्थन करते हैं।

---

## हाल ही में सोवियत संघ के प्रधान मन्त्री की भारत यात्रा के बारे में वक्तव्य

**प्रधान मन्त्री (श्री मोरार जी देसाई)** : जैसा कि सदन को मालूम है कि सोवियत रूस की मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष महामान्य श्री ए० एन० कोसोगिन 9 से 15 मार्च, 1979 तक राजकीय यात्रा पर भारत पधारे। इससे पहले 1968 में उनकी भारत यात्रा के बाद से तो भारतीय अर्थ-व्यस्था तथा कृषि के क्षेत्र में काफी परिवर्तन हुए हैं। इसलिए हमने यह उचित समझा कि उन्हें भारतीय विकास की गति और स्वरूप से अवगत कराया जाये। उन्होंने अपने कार्यक्रम के मुताबिक 3 दिन दिल्ली में बिताए और बाकी के दो दिनों में अन्य जगहों की यात्रा की। उन्होंने राँची हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन प्लांट का दौरा किया और फिर कुछ समय आनन्द में बिताया, जहाँ एक विशिष्ट भारतीय गाँव, अमूल डेरी प्लांट तथा नेशनल डेरी डेवेलपमैंट बोर्ड देखा। उन्होंने बंगलूर में हिन्दुस्तान मशीन टूल्स प्लाँट तथा इंडियन स्पेस रिसर्च आर्गेनाइजेशन का भी दौरा किया। उन्होंने जिन संस्थानों को देखा और वहाँ उनका जो हार्दिक स्वागत हुआ उनकी उन्होंने बहुत सराहना की।

दिल्ली में ठहरने के दौरान मेरे तथा उप-प्रधान मंत्री (वित्त) और उप-प्रधान मंत्री (रक्षा), विदेश मंत्री तथा उद्योग मंत्री के साथ कई बार लम्बे विचार-विमर्श हुए। हमारी सरकार के कुछ सदस्यों और उनके शिष्ट मण्डल के कुछ वरिष्ठ सदस्यों के साथ हमारी दो पूर्ण बैठकें हुई थी। इन विविध विचार-विमर्शों के दौरान जो महत्वपूर्ण बातें सामने आईं उनका सार संयुक्त विज्ञप्ति, (जिसकी एक प्रति सभा पटल पर रख दी गई है) में दिया गया है। चूंकि हम अपनी बातचीत के दौरान जिन महत्वपूर्ण निष्कर्षों पर पहुँचे उनका सार इस विज्ञप्ति में दे दिया गया है इसलिए यहाँ मैं उनका फिर जिक्र नहीं कर रहा हूँ।

भारत-सोवियत सम्बन्ध इस बात का एक जीता-जागता उदाहरण है कि किस तरह दो देश, जिनका सामाजिक-आर्थिक स्वरूप एक दूसरे से भिन्न हैं, द्विपक्षीय हित के लिए तथा पंचशील के आधार पर मिलजुलकर काम कर सकते हैं। हमारे दोनों देशो के बीच सहयोग को एक नई गति मिली है और यह सहयोग न केवल एशिया, बल्कि सारे विश्व में शांति तथा स्थिरता बनाये रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सोवियत रूस भारत की गुटनिरपेक्ष नीति की कदर करता है जोकि हमारे निर्णय और

कार्य की स्वतन्त्रता में परिलक्षित होती है। यूरोप में तनाव कम करने तथा सहयोग बढ़ाने के लिए सोवियत रूस ने जो काम दिया है उसकी भी हम कदर करते हैं। हम चाहेंगे कि विश्व के अन्य भागों में भी तनाव कम करने के प्रयत्न किये जायें। इसलिए दक्षिण पूर्व एशिया पश्चिम में भी अशान्त स्थिति से हमारा चिन्तित होना स्वाभाविक था। हम इस बात पर सहमत हुए कि किसी भी देश को जनता को अपने ढंग से, अपनी इच्छा और प्रकृति मुताबिक बाहरी हस्तक्षेप के बगैर अपना विकास करने देना चाहिए। हम इस बात पर भी सहमत हुए कि दोनों देशों के सम्बन्ध मौलिक सिद्धान्तों पर आधारित होने चाहिए जैसे कि क्षेत्रीय अखण्डता, प्रभुसत्ता तथा बल प्रयोग न करने जैसे सिद्धान्तों के प्रति आदर। हमने यह स्वीकार किया कि एशिया में शाँति और स्थिरता बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि इस इलाके के सभी देश अपने आपसी हित के लिए, समानता और प्रभुसत्ता के प्रति आदर के आधार पर एक दूसरे के साथ सहयोग करें।

मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी हो रही है कि हमारे दोनों देशों के बीच विचारों में काफी हद तक समानता है। जैसा कि सदन को मालूम है, भारत और सोवियत रूस के बीच कई क्षेत्रों में आपसी हित के लिए सहयोग हुआ है। भारत-सोवियत सम्बन्धों की यह एक अच्छी परम्परा है कि दोनों देशों के नेता समय-समय पर मिलकर कई विषयों, जिनमें द्विपक्षीय सम्बन्ध तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति शामिल है, पर विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। उनके वर्तमान दौरे में एक बार फिर इन सम्बन्धों के महत्व का पता चलता है क्योंकि ये दोनों देशों को करीब लाने में सहायक है। यह हमारा विश्वास है कि इस यात्रा के दौरान जो विचार-विमर्श हुये हैं उनसे भारत-सोवियत सहयोग को और प्रोत्साहन मिलेगा और दोनों देशों के बीच समझ बूझ की जो भावना कायम है उसमें समय के साथ-साथ वृद्धि होगी।

---

## उद्योग (विकास और विनियमन) संशोधन विधेयक-जारी

**अध्यक्ष महोदय** : हम पहले वाली चर्चा जारी करते हैं।

**श्री वयालार रवि** : अध्यक्ष मोहदय, श्री जार्ज फर्नानडिस द्वारा पुनः स्थापित किये गये इस विधेयक का अत्यन्त ही सीमित कार्यक्षेत्र है परन्तु इसके साथ ही साथ यह महत्वपूर्ण समस्या भी सुलझानी है। वस्तुतः मन्त्रो महोदय इस सदन में बोलने के लिए हर अवसर प्राप्त करने के लिए बड़े उत्सुक रहे हैं। यह स्वागत योग्य बात है। अब वे सरकार के कार्यक्षेत्र में प्रेसर कुकर, 'कटलटी' आदि को भी शामिल करने के बारे में वकालत कर रहे हैं। अब तो वह कुछ उद्योगों को सरकार के द्वारा हाथ में लेने की बात कर रहे हैं। महोदय, इन्हें अपने हाथ में लेने के बजाय वे केवल लेने की घोषणा मात्र कर रहे हैं। यदि सरकार इन उद्योगों को अपने हाथ में लेने की इच्छुक ही है तो यह किया तो इसे विधिवत हाथ में लिया जाना चाहिए। श्री जार्ज फर्नानडिस के कथन पर मुझे कोई आश्चर्य नहीं है, क्योंकि एक बार उन्होंने कहा था कि मेरे चुनाव क्षेत्र में तो पीने का पानी तक उपलब्ध नहीं है और भूतपूर्व काँग्रेस सरकार 'फाइव स्टार' होटलों का निर्माण करती रही है। मैं इस सदन को यह बताना चाहता हूँ कि श्री फर्नानडिस ने अब तक अपनी विदेश यात्राओं पर 6 लाख रुपये अधिक की धनराशि खर्च की है। आखिर किस लिए यह खर्च किया गया ?